Impact Factor 2015
1.315

Year 06 (01), Vol. X
February 2015

ISSN-0976-8149

Manglam

Half Yearly Journal of Humanities & Social Sciences

मङ्गलम्

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed Journal

Editor
Dr. Dinkar Tripathi

Manglam Sewa Samiti, Allahabad (U.P.) INDIA
(Regd. Under Society Registration Act 21, 1860)

PATRON'S

Prof. Laxmi Narayan Tripathi
Ex.Chairmam,Uttar Pradesh Higher Education Service Commission Allahabad.(U.P.)

Prof. Suresh Chandra Pandey
University of Allahabad, Allahabad.(U.P.)

Dr. Ram Hit Tripathi
Principal, Pt. Mahadev Shukla Krishek Post Graduate College Gaur, Basti (U.P.)

Prof. J.P. Pachauri
Hemwati Nandan Bahuguna Garhwar University, Garhwal, Uttarakhand.

Prof. Saiyad Najmul Raza Rizwi
Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.)

Prof. Ramesh Prasad Gautam
Dr. Hari Singh Gaur University, Sagar, (Madhya Pradesh)

Prof. M.S. Kambli
Bombay Universiti, Mumbai, (Maharastra)

Dr. Rajendra Prasad Pandey
Ex. Director General Of Public Enterprises Beauro, Government U.P.,(U.P.)

EDITOR

Dr. DINKAR TRIPATHI

EDITORIAL BOARD

Prof. Rama Shankar Mishra
University of Lucknow, Lucknow, (U.P.)

Prof. U.K. Tiwari
University of Allahabad, Allahabad, (U.P.)

Prof. Noor Mohmmad
University of Delhi, Delhi

Prof. Manjeet Chaturvedi
Banaras Hindu University Varanisi (U.P.)

Prof. H.K. Sharma
University of Allahabad, Allahabad, (U.P.)

Dr. Geeta Tripathi
Ganpat Sahai Post Graduate College, Suttanpur (U.P.)

Devevdrad Pandey
Society For All Round Development, New Delhi

Prof. Rajendra Singh Chauhan
Himachal Pradesh University, Shimla, (Himachal Pradesh)

Prof. Shri Prakash Mani Tripathi
Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.)

Prof. Sanjeev Kumar Sharma
Chudhri Charan Singh Meerut University, Meerut (U.P.)

Dr. Diwakar Tripathi
Dr. R.M.L. Awadh University, Faizabad (U.P.)

Dr. Awdesh Kumar Singh
Feroze Gandhi P.G. College Raibarely (U.P.)

Dr. Ritesh Tripathi
C.M.P. Degree College, Allahabad (U.P.)

ADVISORY BOARD

Prof. Anand Prakash Tripathi
Dr. Hari Singh Gaur University, Sagar, (Madhya Pradesh)

Shyam Prasad Saidai
Bal Kumari Mahavidyalaya, Narayangarh Chitwan, (Nepal)

Prof. Som Nath Tripathi
Sampurnanand Sanskrit University, Varansi (U.P.)

Prof. R.S. Aadha
Jai Narayan Vyas University, Jodhpur, (Rajasthan)

Prof. Hari Narayan Dubey
University of Allahabad, Allahabad, (U.P.)

Prof. Pratap Singh
Maharshi Dayanand University, Rohtak, (Haryana)

Dr. Dheeraj Kumar Chaudhary.
Ishwar Sharan Degree College, Allahabad (U.P.)

Joydeb Garai
University of Chittagong (Bangladesh)

Prof. Phatik Chandra Sharma
Guahati University, Assam

Prof. Nagendra Pratap Chauhan
B.R.A. Bihar University, Muzzaferpur, (Bihar)

Prof. J.N. Pandey
Deen Dayal Upadhyay Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.)

Dr. Anupam Sharma
Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, (M.P.)

Dr. Arunodaya Bajpayi
Agra College, Agra (U.P.)

Mohd. Younes Bhat
Government Degree College, Anantnag Jammu & kashmir

Impact Factor 2015
1.315

Year 06, (01), Vol. X
Feb. 2015

ISSN-0976-8149

Manglam

Half Yearly Journal of Humanities & Social Sciences

मङ्गलम्

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed Journal

Editor
Dr. Dinkar Tripathi

Manglam Sewa Samiti, Allahabad (U.P.) INDIA
(Regd. Under Society Regestration Act 21, 1860)

सम्पादक, मुद्रक व स्वामी

डॉ० दिनकर त्रिपाठी

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग

फ़ीरोज गाँधी कालेज, रायबरेली (उ०प्र०), भारत

मो ०- +91-7398180008, +91-9044666672

Email- drdinkartripathi@gmail.com

प्रकाशक

मङ्गलम् प्रकाशन

463/359 जी-2 शिवम् अपार्टमेन्ट

ममफोर्डगंज, इलाहाबाद-211002 (उ०प्र०) भारत

फोन नं०- +91-9196002888

कम्प्यूटर ग्रॉफिक्स

संजीव कम्प्यूटर एवं प्रिन्टर्स, इलाहाबाद, (उ०प्र०) भारत

Email- computerallahabad@gmail.com

तकनीकी सहयोग

डॉ०(श्रीमती)वंदना त्रिपाठी

आवृत्ति

प्रथम अंक - फरवरी 28

द्वितीय अंक - अगस्त 31

मूल्य

* विदेश में - $ 80

** देश में - ₹ 600

मङ्गलम् (अर्द्धवार्षिक द्विभाषीय) शोध पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में दृष्टि, विचार और अभिमत लेखकों के अपने हैं, सम्पादक के नहीं। इनमें सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। अतः पत्रिका के सम्पादक एवं प्रकाशक पर इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। विवाद माननीय न्यायालय, इलाहाबाद में ही विचारणीय होंगे।

सम्पादकीय

लोकतंत्र वर्तमान विश्व की सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है। आधुनिक राजनीति की उत्तम जीवनशैली है। लोकतंत्र वह अनुपम संगठन है; जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित; संरक्षित और विभासित होता है। मानवता किंवा मानवाधिकारों की सुरक्षा और सुलभता सुनिश्चित होती है। वस्तुतः लोकतंत्र लोकमत का विषय है। लोकमन और लोकमञ्च का अधिष्ठान है। जनता शिव संकल्पमय होकर जनप्रतिनिधियों को अपना मन मत प्रदान कर पवित्र लोकतंत्र का निर्माण तथा उसका अग्रेषण करती है। लोकतंत्र की परम्परा का पल्लवन कर उसे अक्षुण्ण बनाती है। लोकतंत्रीय परम्परा की अबाध प्रवाहमयी गति ही राजनीतिज्ञों एवं जनमानस का परमधर्म का रूप बन जाता है।

सभी धर्मों में राष्ट्रधर्म श्रेष्ठ धर्म है। इसकी घोषणा "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" कहकर ऋषि ऋतम्भरा ने आदिकाल से ही हमें जागृत एवं सचेष्ट किया है। ऋचाओं से लेकर अथर्वमंत्रों में लोकतंत्र की मूलभूत आदर्श की दार्शनिकता अनुस्यूत है। जो धर्म प्रवण है। अध्यात्मपरक है। राजतंत्र का राजा भी दार्शनिक स्वीकारा गया है। उसकी मंत्रिपरिषद् के ऋषि तुल्यज्ञानी सदस्य के सत्परामर्श ही से राज्य संचालित होते रहे। जो प्रजातांत्रिक व्यवस्था के ही पोषक रहे हैं। प्राच्य भारत के राजा श्रीरामचन्द्र जी ने तो स्नेह, दया, मित्रता यहाँ तक कि जानकी को भी प्रजा की आराधना के लिए त्यागने में तनिक भी संकोच और कष्ट का अनुभव नहीं किया–

स्नेहं दयां च सौख्यञ्च यदि वा जानकी मपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति में व्यथा।।

–उत्तररामचरितम्–छायाङ्क

सम्भवतः इस कथन में अत्युक्ति नहीं होगी कि प्राच्य भारतीय हिन्दू राजतंत्र की आत्मा प्रजातांत्रिक ही थी। भारतीय राजनीतिक जीवन जनतंत्रात्मक व्यवस्था की नींव पर यत्किञ्चित् परिवर्तनों के साथ देखी जा सकती है। यही कारण है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के अनन्तर विश्वस्तर पर प्रजातांन्त्रिक सरकारों की अपेक्षाएँ बनने पर सर्वप्रथम भारत में ही प्रत्यक्ष प्रजातंत्र अस्तित्व में आया। यह प्रजातंत्र परम सफल; व्यापकस्तरीय और विकसनशील बन सका है। पूरे विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला भारतीय प्रजातंत्र अपनी जन प्रियता, पवित्रता और परिवर्तनशीलता में विश्व के लिए अनुकरणीय बन गया है। विशाल भारत में 'अनेकता में एकता' की विशेषतावाली संस्कृति ने 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की संकल्पना वर्तमान में प्रत्येक मतदाता के मन में निष्ठित कर दी है। भारतीय मतदाताओं के मत, विचार और व्यवहार निश्चयेन परिपक्व प्रजातंत्र के बन चुके हैं। हर पतदाता अब विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक स्तर पर भारत के गौरव की अभिलाषा से प्रतिनिधियों को अपना मत प्रदान करने का आधार बनाने

लगा है। यही कारण है कि कई दशकों वर्ष बाद विगत लोकसभा का चुनाव परिणाम भाजपा को पूर्ण बहुमत से प्राप्त हुआ। श्री दामोदर दास नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में उक्त कांक्षापूर्ति के संकेत जनमानस के विश्वास में झलका। श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व ने पूरे विश्व को चमत्कृत किया है। इसके परिणामी लाभ दुनिया के शीर्ष देशों में श्री मोदी के स्वागत के रूप में देखा जा सकता है। उनके आत्मबल, उनकी अनुभवजन्यभाषा, कायिकभाषा और सर्वविध विकासमयी दूरदृष्टि, वैज्ञानिक सोच विचार तथा सर्वजन समवेत सहयोग लेने के भावों का प्रभाव भारत सहित विश्व के लगभग सभी देशों पर पड़ा है। दुनिया के बहुलोकप्रिय राजनेताओं की सूची में इनका नाम आदर प्राप्त कर रहा है। लोकतंत्र हिमायती अमेरिका तो मोदी की सफलता से चमत्कृत सा हो गया है। उभय देशों के मैत्रीभाव में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। शपथ ग्रहण समारोह में पड़ोसी देशों के प्रधान राजनयिकों को आमंत्रित करके उन्हें सम्मान देने से श्री मोदी के निज व्यक्तित्व की गरिमा बढ़ी है। जांपान, नेपाल, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों की यात्रा से भारत का शिर ऊँचा किया। विश्व को भारत की महिमा, उसकी सबलता एवं उसके प्रजातंत्र की परिपक्वता तथा सफलता का संज्ञान प्राप्त हुआ है। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारतीय जनतंत्र के जन जन के मन को समय से समझा। उनके सहयोगी जन समुचित वातावरण निर्मित करने में कोई कमी नहीं किए। प्रचारतंत्र को वैज्ञानिक आधार दिया। सूचना तंत्र का भरपूर सहयोग मिला। परिवर्तनकांक्षी जनमानस ने पूरे भारत में भाजपा को पूर्ण बहुमत प्रदान कर श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद पर अधिष्ठित पाया। भारत प्रगति पथ पर अग्रसर है। भारतीय लोकतंत्र का सफल ध्वज विश्व में लहर रहा है।

उक्त उपलब्धि एवं सफलता को प्राप्त करने में कठिन सतत प्रयत्न वैज्ञानिक एवं तार्किक सोचविचार, समय की सच्ची परख असन्देहिल सहयोग और दूरदृष्टि मूल कारण रहे हैं। समय की उपयुक्तता में कृत कार्य फलप्रद तो होते ही हैं। समय की चाह में नित नूतन विचार और तथ्यों का अन्वेषण निश्चयतः ज्ञान विज्ञान की विविध शाखाओं को उच्चता प्रदान करता है। तत्त्वबोध विकसित होता है। इहलोक और परलोक की सिद्धि सम्भव होती है। इसी अनुसन्धित्सा की कांक्षापूर्ति में 'मङ्गलम्' का वर्ष 06 (01) अंक X फरवरी 2015 पुष्प ज्ञानब्रह्म को अर्पित है। सुधी समीक्षक, अन्वेषक एवं जिज्ञासुजनों के सत्परामर्श सादर आमंत्रित हैं।

दिनकर त्रिपाठी

सम्पादक

विषयानुक्रम

सम्पादकीय

क्र०सं०	शोधपत्र/लेखक	पृष्ठ
1.	**Indian Tourism Industry- Challenges And Emerging Issues** -Dr. Mahendra Pal Singh	001–005
2.	**Dalit Women And Caste Related Violence in India** -Dr. Chanchal Kumar	006–014
3.	**India's Policy On Afganistan** -Dr. Sangit Sarita Dwivedi	015–019
4.	**Politics of Coalition Government in Maharastra** -Dr.Vikramrao Narayanrao Patil	020–025
5.	**Politics of Nuclear Supplier's Group** -Dr. Prabhakar Nath Mishra	026–033
6.	**Mahua flower (Madhuca Indica) in the upliftment of Tribal people Narayanpur District,Chhattisgarh India.** -Dr. Uma Sharma	034–039
7.	**Impact of Social Networking Sites On Social life** -Miss Shweta Sinha	040–044
8.	**Development: An Insight into the Evolution of Meaning, Nature And Dimensions of Development** -Sonali Singh	045–061
9.	उत्तर प्रदेश में उपलब्ध शिक्षा ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ : एक सर्वेक्षण - डॉ०राम हित त्रिपाठी	062–069
10.	मानवाधिकार एवं कमजोर वर्ग : गाँधीवादी परिप्रेक्ष्य - डॉ०राजेश कुमार शर्मा	070–079
11.	मनुस्मृति में वर्णित स्त्री दशा - डॉ० अच्छे लाल	080–083
12.	मौर्यों के जनकल्याणकारी कार्य-तत्कालीन समाज की आवश्यकता - डॉ० संजय चौधरी	084–093
13.	महाराष्ट्र में ठाणे जिले के आदिवासियों की संस्कृति : एक दृष्टिकोण - एम०एस० बाघ	094–104
14.	निर्वाचन आयोग : संविधान सभा में परिचर्चा - डॉ०प्रकाशवीर दाहिया	105–110

15. ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज्य में महिलाओं की भूमिका 111–115
- डॉ०दीपशिखा श्रीवास्तव

16. कविता की संवेदनात्मक बनावट 116–120
- डॉ०बद्री दत्त मिश्र

17. पंचायती राज व्यवस्था : भारतीय लोकतंत्र की प्रथम सीढ़ी 121–129
- डॉ०शिखा जैन

18. सल्तनत कालीन समाज में स्त्रियों की दशा 130–133
- डॉ०केशरी नन्दन मिश्र

19. वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा : एक परिदृश्य 134–137
- डॉ०लोकेश त्रिपाठी

20. कोमलकण्टकावलिः में हास्य विधान 138–143
- डॉ०राजेश कुमार

21. भारत-पाकिस्तान के मध्य व्यापारिक सम्बन्ध : एक अवलोकन 144–154
- डॉ०प्रमोद सिंह

22. कठोपनिषद् के नचिकेतोपाख्यान में दान-धर्म का निरूपण 155–159
- डॉ०शालिनी साहनी

23. वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता में भाषिक अराजकता 160–166
- डॉ०सुमीत द्विवेदी

24. समलैंगिकता : एक अपराध या अधिकार 167–175
- राजा राम मीना

25. भारतीय राजनीति में धर्म और साम्प्रदायिकता का प्रभाव 176–180
- डॉ० मन्जू बघेल

26. झारखण्ड के उराँव तथा खड़िया धात्री माताओं में पोषण सम्बन्धी समस्या का अध्ययन 181–187
- वैजयन्ती उराँव

27. उत्तर भारत की सामाजिक आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति 188–191
- संतोष कुमार

28. महाभोज और समकालीन भारतीय राजनीति की समस्या 192–195
- चाँदनी जायसवाल

29. श्रीहित परमानंद दास जी के काव्य में शारदीय रास 196–198
- श्रीमती वसुन्धरा गुप्ता

30. मेहरुन्निसा परवेज़ की कहानियों में आदिवासी जनजीवन 199–206
- डॉ० अहमद अदील

31. वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति 207–212
- डॉ०रवीन्द्र प्रताप सिंह
- डॉ०राम निहोर सिंह